International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 10-07-2020; Accepted: 25-07-2020; Published: 11-08-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 4; 2020; Page No. 126-128

बिहार की धरती से स्वतंत्रता दिलाने में वीरवर कुँअर सिंह का योगदान

सीता कुमारी
शोधार्थी, विश्वविद्यालय हिन्दी–विभाग, ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

सारांश
वीरवर कुँअर सिंह' महाकाव्य में सन् 1857 ई. के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महानायक महावीर कुँअर सिंह की शौर्य गाथा को श्री आरसी प्रसाद सिंह ने बड़े सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है। बाबू कुँअर सिंह एक छोटे से रियासत जगदीशपुर के जमींदार शासक थे। यह क्षेत्र वर्त्तमान आरा के नजदीक है। कुँअर सिंह भारतभूमि की स्वतंत्रता के पक्षधर थे। पटना, सोनपुर आदि कई स्थानों पर 1857 ई. के पूर्व क्रांतिकारियों की बैठकों में उनके सम्मिलित होने का पता चलता है। ऐसा तत्कालीन पटना के जिला मजिस्ट्रेट के द्वारा अपने वरीय अधिकारी को लिखे पत्रों में लिखा है। जब दानापुर के देशी सैनिकों ने विद्रोह किया तब उन्होंने बाबू कुँअर सिंह से ही नेतृत्व करने की याचना की जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। इस 80 वर्षीय महावीर के शौर्य से बड़े–बड़े रण बाँकुरे घबरा गए। उनके पराक्रम को देखकर अंग्रेज इतिहासकारों ने सत्य ही लिखा कि अगर यह अस्सी वर्षीय शेर अपनी 40 वर्ष की अवस्था में युद्ध करता तो अंग्रेजों को उसी समय भारत छोड़ कर भागना पड़ता। ''इतिहासकार होम्स भी कुछ ऐसे ही विचारों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि–'हमलोग (फिरंगी) बहुत सौभाग्यशाली थे कि क्रांति के समय कुँअर सिंह की आयु 40 वर्ष नहीं थी। वह बूढ़ा राजपूत ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ आन से लड़ा और शान से मरा।

मूल शब्द: वीरवर कुँअर सिंह, स्वतंत्रता, बिहार

प्रस्तावना
सन् 1717 को बिहार की धरती पर भोजपुर जिले के जगदीशपुर गाँव में बाबू वीरवर कुँअर सिंह का जन्म हुआ था। इनके पिता बाबू साहबजादा सिंह, माँ रानी पंचरत्न देवी थी। ये जगदीशपुर के जमींदार थे। इनके पूर्वज मालवा के प्रसिद्ध शासक महाराज भोज के वंशज थे। कुँअर सिंह के पास बड़ी जागीर थी, किन्तु उनकी जागीर ईस्ट इंडिया कम्पनी की गलत नीतियों के कारण छीन गई थी।

अंग्रेजों के चंगुलों से बिहार की धरती को मुक्त करने के लिए उन्होंने अपनी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। प्रथम स्वतंत्रता के समय वीरवर कुँअर सिंह की उम्र 80 वर्ष की थी। वृद्धावस्था में भी उनमें अपूर्व साहस, बल और पराक्रम था। उन्होंने देश को पराधीनता से मुक्त कराने के लिए दृढ़ संकल्प के साथ संघर्ष किया।

अन्य योद्धाओं की तुलना में कुँअर सिंह के पास साधन सीमित थे परन्तु अदम्य साहस के साथ वे अंग्रेजों से लड़ाई लड़े। क्रान्तिकारियों को संगठित कर अपने साधन को ध्यान में रखते हुए अंग्रेजों को बार–बार हराया। उन्होंने अपनी युद्ध नीति से अंग्रेजों के धन–जन को अधिक क्षति पहुँचाया। उन्हें अंग्रेजों की सैन्य शक्ति का ज्ञान था। कुँअर सिंह बिहार से उत्तर–प्रदेश तक युद्ध करके अंग्रेजों को खुब छकाया। वे युद्ध अभियान में बांदा, रीवां तथा कानपुर भी गए, इसी बीच अंग्रेजों को इग्लैंड से नयी सहायता प्राप्त हुई, जिससे कुछ राज्यों के शासकों ने अंग्रेजों का ही साथ दिया। उसने कुँअर सिंह का साथ नहीं दिया।जिसके वजह से एक साथ एक निश्चित तिथि को युद्ध आरंभ न होने से अंग्रेजों को विद्रोह के दमन का अवसर मिल गया, अंग्रेजों ने अनेक छावनियों में सेना के भारतीय जवानों को निःशस्त्र कर विद्रोह की आशंका में तोपों से भून दिया। ऐसी विषम परिस्थिति में भी वीरवर कुँअर सिंह ने अदम्य साहस और शौर्य का परिचय देते हुए अंग्रेजी सेना से लोहा लिया और बिहार ही भारत की धरती को अंग्रेजों के क्रूर अत्याचार से मुक्त कराया जिस महान कार्य के लिए उनका योगदान अति महत्वपूर्ण है।

बिहार में विद्रोह का प्रारंभ 12 जून 1857 को सर्वप्रथम संथाल परगना जिले के देवघर अनुमंडल में रोहिणी नामक गाँव में देशी थल सेना की 32वीं रेजीमेंट की एक कंपनी ने सबसे पहले किया। जून 1857 के पूर्वार्द्ध में ही मुजफ्फरपुर में भी अंग्रेजों के विरुद्ध असंतोष फैल गया। परिस्थिति को देखते हुए अंग्रेज अधिकारियों ने भयभीत होकर अतिरिक्त सुरक्षा व्यवस्था की मांग की थी क्योंकि उन्हें जेल और कोषागार के नजीबों पर अविश्वास था। इसी प्रकार शाहाबाद क्षेत्र के लोग भी असंतुष्ट थे तथा यह सूचना मिली थी कि कुछ लोग/विद्रोही महिलाओं के वेश में सक्रिय थे। छपरा के पश्चिम में भी विद्रोह की सूचनाएँ प्राप्त हो रही थी। इन सबकी सूचना पटना के कमिश्नर ने लेफ्टिनेंट गवर्नर को दी थी और कमिश्नर को निर्देश मिला था कि विद्रोहियों को बिना किसी वारंट के गिरफ्तार किया जाए तथा 17वें कानून (1857) के अंतर्गत संक्षिप्त सुनवाई कर दंडित किया जाए और भगोड़े के बारे में सूचना देने वाले को 50 रु. का इनाम दिया जाए।

19 जून 1857 को पटना कमिश्नर विलियम टेलर ने तीन वहाबी नेताओं को अन्य प्रतिष्ठित लोगों के साथ विचार–विमर्श के लिए बुलाया और बातचीत के बाद इन तीनों को रोक लिया और धोखे से गिरफ्तार करवा कर जेल भेज दिया जिसका सबने निंदा की। फॉरेस्ट ने अपनी पुस्तक में लिखा है। उन्हें गिरफ्तार करने का तरीका सम्मानजनक नहीं कहा जा सकता तथा सरासर विश्वासघात था। इन सब कर्रवाइयों का तो विरोध होना ही था और पटना में कंपनी सरकार के विरोध में लोग खड़े हो गये।

दानापुर छावनी के सैनिकों ने अनेक पूर्वलिखित कारणों से विद्रोह कर दिया और दानापुर के बाद आरा की ओर निकल पड़े। कुँअर सिंह के विश्वस्त सैनिक हरेकृष्ण सिंह और निशानसिंह ने विद्रोही सैनिकों के साथ आरा के लिए प्रस्थान किया। जब आरा के अधिकारियों को, विद्रोहियों को आरा की ओर बढ़ने की सूचना मिली तब उन्होंने पटना से आरा के बीच में स्थित कोइलवर नामक स्थान जहाँ पर सोन नदी बहती थी, पर स्थित रेलवे कर्मचारियों को सख्त निर्देश दिया कि विद्रोही सोन नदी पार नहीं

कर पाए। इसके लिए उन लोगों ने नावें या तो हटा दी या डुबो दी। परन्तु उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उन्होंने देखा कि सैनिकों के पहुँचने पर वहाँ अनेक नाव तैयार मिली और सैनिकों ने सरलता से सोन नदी पार कर ली। इस घटना की सूचना रेलवे के दो कर्मचारियों डेलपीरस और बोयले ने तत्क्षण रेल से यात्रा शाहाबाद जिला प्रशासन को इसकी सूचना दी।

कंपनी के सभी अंग्रेज अधिकारियों ने 'बोयले हाऊस', जिसे आजकल 'आरा हाउस' कहा जाता है, में शरण ली। इस छोटे भवन का प्रयोग उस समय किले की तरह किया गया। इसकी कड़ी सुरक्षा कुछ अंग्रेज तथा सिक्ख सैनिक करने लगे। विद्रोहियों के आरा पहुँचने के समय कुँअर सिंह जितौरा के जंगलों में शिकार खेलने गये हुए थे। इस बीच विद्रोहियों ने कुँअर सिंह के कुछ विरोधियों को तंग किया और कुछ व्यापारियों को लूटा भी जिसकी जानकारी होने पर कुँअर सिंह नाराज हुए।

विद्रोहियों को साथ देने–न–देने के मुद्दे पर कुँअर सिंह ने अपने लोगों के साथ सलाह–मशविरा किया जिसमें अमर सिंह और कुछ अन्य लोगों ने असहमति दर्शायी। कुँअर सिंह ने आम सहमति बनाकर ही विद्रोहियों का नेतृत्व किया। बागी सैनिकों को किसी कमांडेंट के नेतृत्व में ही कार्य करने का अनुभव था। इसलिए उन्होंने अनुभवी और बहादुर कुँअर सिंह के नेतृत्व के लिए चुनाव किया। विद्रोहियों द्वारा आरा में सबसे पहले सरकारी खजाने को लूटा गया। इसके बाद उन्होंने आरा जेल के कैदियों को मुक्त कर दिया। फिर समस्त सरकारी भवनों/कार्यालयों को ध्वस्त अथवा ठप्प कर दिया। इन सबके बाद उन लोगों नें बोयले हाऊस को घेर लिया। आरा किले के घेराबंदी से उसमें पीने के पानी की कमी हो गई तो सिक्ख सैनिकों ने 24 घंटे के अंदर कुँआ खोद डाला। कुँअर सिंह ने सिक्ख सैनिकों को बगावत के लिए प्रेरित किया लेकिन वे इसमें सफल नहीं हुए। आरा हाउस की घेराबंदी तीन दिनों तक चली।

अंग्रेजों ने लिखा है कि घेराबंदी के उन दिनों वे प्रत्येक पल मौत की दहशत में गुजार रहे थे। विद्रोहियों ने आउट हाउस से सुरंगे खोदना प्रारंभ कर दिया था। दहशत में फंसे यूरोपीयनों की सुरक्षा के लिए दानापुर से 400 सैनिक रवाना हुए, लेकिन वे सैनिक दंग रहे गये जब उन्होंने अपने से कई गुणा विद्रोहियों को पेड़ों की ओट में छुपे स्वयं को घिरा पाया। पलक झपकते ही एक तिहाई सैनिक काल की गाल में समा चुके थे। बांकी तितर–बितर होकर भाग गये। आरा हाऊस में चार घोड़े मर गये थे जिनकी बदबू यूरोपियनों को परेशान कर रही थी।

यह कुँअर सिंह की महानता ही थी कि उन्होंने विद्रोहियों को यह सख्त हिदायत दी थी कि भारतीयों (अंग्रेजों को साथ देने वाले सिक्ख सैनिक आदि) को न मारा जाए। वे हमारे भाई हैं जो भटक गये है। विद्रोह की भयावहता को देखते हुए पटना के कमिश्नर द्वारा मुजफ्फरपुर तथा गया के मजिस्ट्रेट को अपने सभी साधनों सहित पटना कार्यालय में योगदान करने को कहा गया। सभी जगह से अंग्रेज सैन्य टुकड़ियों को पटना, दानापुर तथा शाहाबाद में केन्द्रित होने का निर्देश दिया गया, ताकि विद्रोहियों से मुकाबला किया जा सके। अंग्रेज अफसर ऐसा महसूस कर रहे थे जैसे यह युद्ध कुँअर सिंह द्वारा पूर्व नियोजित है। यह एक साधारण विद्रोह न होकर भारतीय द्वारा आजादी हेतु लड़ा गया युद्ध हो। परन्तु कतिपय कारणों से अंग्रेज परस्त इतिहासकारों ने इसे सैनिक विद्रोह की संज्ञा दी। इस लड़ाई में भारतीय होते हुए भी सिक्ख सैनिकों ने अंग्रेजों का साथ दिया। वे मातृभूमि से गद्दारी कर रहे थे लेकिन अंग्रेजों ने उन्हें वफादार कहा। कंपनी प्रशासन ने कैप्टन डनबर के नेतृत्व में 100 सिक्ख सैनिक सहित 500 सैनिकों का दल (विद्रोहियों) कुँअर सिंह से युद्ध करने भेजा। आरा के निकट कयमनगर में एक आम के बगीचे में कुँअर सिंह के सैनिकों के साथ अंग्रेजी पलटन का युद्ध हुआ। कुँअर सिंह के छापामार युद्ध के सामने कैप्टन डनबर की सेना टिक न सकी। मुश्किल से 50 सैनिक ही जिंदा बच सके। कैप्टन डनबर की आत्मा भी शरीर से मुक्त हो गई। इस युद्ध के बाद कुँअर सिंह का पूरे आरा पर कब्ज हो गया और उन्होंने स्थानीय शासन–व्यवस्था की नींव खड़ी कर ली। पूर्वी और पश्चिमी आरा को दो थानों में बाँटा। उन्होंने थानों पर तुराब अली तथा खादिन अली को कोतवाल नियुक्त किया। परन्तु आरा पर उनका यह कब्जा ज्यादा दिनों तक टिक न सका। बंगाल आर्टिलरी का मेजर विनसेंट आयर जो नदी मार्ग से पूरे सैन्य–साजों समान के साथ इलाहाबाद जा रहा था, उपद्रव की सूचना मिलने पर आरा के निकट गजराजगंज में उतर गया। बड़ी संख्या में उच्चतर हथियार और तोपों से लैस आयर की सेना और कुँअर सिंह की सेना के बीच आरा से 10 किमी की दूरी पर बीबीगंज में युद्ध हुआ। इसमें पारंपरिक और निम्नतर हथियार वाले देशी सैनिकों की हार हुई। आयर ने आरा हाउस के बंधक अंग्रेजों को मुक्त करवाया। आरा हाऊस पर कब्जा होते ही संपूर्ण आरा की प्रशासनिक व्यवस्था अंग्रेजों के अधीन आ गई। लेकिन आयर कुँअर सिंह से निर्णायक लड़ाई लड़ने की इच्छा से जगदीशपुर गढ़ की ओर बढ़ चला। कुँअर सिंह उस समय जगदीशपुर में 3000 सैनिकों के साथ थे। दोनों पक्षों में दुलौर नामक स्थान पर भीषण युद्ध हुआ। कुँअर सिंह ने छापामार युद्ध लड़ा और अंग्रेजी सेना को बहुत नुकसान पहुँचाया। परन्तु उच्च कोटि के अस्त्र–शस्त्र और तोपों के बल पर आयर यह लड़ाई जीत गया। जगदीशपुर गढ़ पर उसका कब्जा हो गया। उसने जगदीशपुर नगर, बाजार, मंदिर, मकान, आदि को नष्ट करने का प्रयास किया। अंग्रेजों को जगदीशपुर में युद्ध सामग्री तथा तोप बनने का कारखाना मिला। एक अर्धनिर्मित देशी तकनीक का तोप भी मिला। उन सबको अंग्रेजों ने नष्ट कर दिया। कुँअर सिंह और उनसे जुड़ी चीजों को नष्ट करने का प्रण किए अंग्रेजों से जहाँ तक संभव हुआ, उन्होंने विध्वंस किया। जितौरागढ़ के जंगलों में कुँअर सिंह के नये बंगले को भी उन्होंने तोड़ दिया। युद्ध में जीते आयर ने कुँअर सिंह के युद्ध संचालन कौशल से प्रभावित होकर लिखा कि बाबू कुँअर सिंह युद्ध कला के जादूगर है। हमलोग वीर कुँअर सिंह के सामने असहय है। इस घटना के बाद पटना के कमिश्नर विलियम टेलर को अक्षम मानकर हटा दिया गया और उसके जगह सेम्युएल्स को कमिश्नर बनाया गया। अंग्रेजों ने कुँअर सिंह से जुड़े लोगों को एक दिन में ही मुकदमा चला कर फाँसी पर लटका दिया।

कुँअर सिंह को पकड़ने में अंग्रेजों को सफलता नहीं मिली। कुँअर सिंह ने अपने परम सहयोगी छोटे भाई अमर सिंह को जगदीशपुर और आस–पास के क्षेत्र में लोगों को संगठित करने और छापामार तरीके से युद्ध करने का उत्तरदायित्व सौंप कर स्वयं सासाराम और बाद में मिर्जापुर चले गये। प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से पूरे बिहार के लोगों ने कुँअर सिंह का नेतृत्व स्वीकार कर लिया।

अगस्त–सितम्बर 1857 में मुजफ्फरपुर के विद्रोहियों ने घोषणा कर दी कि हम लोगों नें कुँअर सिंह का नेतृत्व स्वीकार कर लिया था। इस बात का प्रमाण ट्रायल के दौरान मुजफ्फरपुर के एक आंदोलनकारी खुलकर चिल्लाया था–''अंग्रेजों और ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन समाप्ति पर है। अब कुँअर सिंह का राज है।'' अंग्रेजों में इस आंदोलन से भय व्याप्त हो गया था। आरा में जिस तरह जेल पर हमला कर कैदियों को छुड़ाया उससे फ्रांस की 1789 ई. की क्रांति की याद ताजा हो उठती है। होम्स नामक इतिहासकार लिखता है–''कुँअर सिंह अगर 40 वर्ष के युवा होते तो अंग्रेजों को 1857 में ही भारत से बाहर जाना पड़ता।''

वी0 डी0 सावरकर अपनी पुस्तक में लिखते है–''सामने की एक झाड़ी की ओर ये दोनों उसे अपने कब्जे में लेने के लिए दौड़ रही थी। उस वृद्ध और युवा की भयंकर स्पर्द्धा में वृद्ध कुँअर सिंह ही उस झाड़ी पर पहले कब्जा करने में सफल रहा।''

निष्कर्ष

"चल कबड्डी आरा, संतावन गोली मारा।" बोलते हुए सुने जाते हैं। गाँवों में होली के समय लोग फाग ढोलक की थाप के साथ कुँअर सिंह की वीरता को गाते हैं। वीर कुँअर सिंह अपनी मातृभूमि की आजादी के लिए अपनी प्रजा से युद्ध में भाग लेने का आह्वान करते हैं। वीर कुँअर सिंह के रिश्तेदार 'रीवाँ नरेश' ने उनका साथ नहीं दिया, बल्कि उन्होंने अंग्रेजों का ही साथ दिया। प्रत्येक देश भक्त को अपने देश और अपनी मातृभूमि से प्रेम होता है। यदि मातृभूमि पर किसी प्रकार का संकट आता है तो, उसकी रक्षा में अपनी जान न्योछावर कर देना भी कम पड़ता है। दोनों वीरों की वीरता प्रेरणा का सच्चा उदाहरण है।

बाबू कुँअर सिंह को लड़ाई में साथ देने के लिए प्रत्येक घर से नोजवानों की फौज साथ हो गई और उन लोगों के सहयोग से बाबू कुँअर सिंह की मजबूत सेना खड़ी हो गई। उस समय सभी लोग अंग्रेजों के अत्याचार से मुक्त होना चाहते थे। सभी एक मत थे, कूटनीति की गुंजाइस नहीं थी। उस समय के नौजवानों ने बिना वेतन लिए लड़ाइयाँ लड़ीं। गाँव–गाँव से लोगों ने खाने के लिए रसद दी। नदी पार करने के लिए नावों का बंदोबस्त किया। जहाँ–जहाँ बाबू साहब गए, लोगों ने हृदय से स्वागत किया और रूपये पैसे से सहायता की। जनता की इच्छा थी की हम अंग्रेजी सेना से मुक्ति पाए। इसके लिए उन्होंने त्याग और वलिदान भी किये। आज भी युवाओं को तत्कालीन युवाओं से प्रेरणा लेनी की जरूरत है। नेक कार्यों के लिए युवाओ को प्रेरित करने का साधन वीर काव्य हो सकता है। 'वीरवर कुँअर सिंह' महाकाव्य को आत्मानुभूत करने की क्षमता का विकास युवाओं में करने की जरूरत है।

संदर्भ सूची

1. वीरवर कुँअर सिंह–आरसी प्रसाद सिंह, प्रकाशक–तारामंडल, प्रथम संस्करण–1989, पृ. 103
2. हल्दीघाटी–श्री श्यामनारायण पाण्डेय, प्रकाशक–इंडियन प्रेस प्रा.लि., इलाहाबाद, 2011, पृ. 129
3. वीरवर कुँअर सिंह–आरसी प्रसाद सिंह, प्रकाशक–तारामंडल, प्रथम संस्करण–1989, पृ. 104
4. वीरवर कुँअर सिंह–आरसी प्रसाद सिंह, प्रकाशक–तारामंडल, प्रथम संस्करण–1989, पृ. 113
5. हल्दीघाटी–श्री श्यामनारायण पाण्डेय, प्रकाशक–इंडियन प्रेस प्रा.लि., इलाहाबाद, 2011, पृ. 137
6. वीरवर कुँअर सिंह–आरसी प्रसाद सिंह, प्रकाशक–तारामंडल, प्रथम संस्करण–1989, पृ. 113
7. हल्दीघाटी–श्री श्यामनारायण पाण्डेय, प्रकाशक–इंडियन प्रेस प्रा.लि., इलाहाबाद, 2011, पृ. 147
8. वीरवर कुँअर सिंह–आरसी प्रसाद सिंह, प्रकाशक–तारामंडल, प्रथम संस्करण–1989, पृ. 114–115
9. हल्दीघाटी–श्री श्यामनारायण पाण्डेय, प्रकाशक–इंडियन प्रेस प्रा.लि., इलाहाबाद, 2011, पृ. 148
10. वीरवर कुँअर सिंह–आरसी प्रसाद सिंह, प्रकाशक–तारामंडल, प्रथम संस्करण–1989, पृ. 119
11. हल्दीघाटी–श्री श्यामनारायण पाण्डेय, प्रकाशक–इंडियन प्रेस प्रा.लि., इलाहाबाद, 2011, पृ. 148
12. वीरवर कुँअर सिंह–आरसी प्रसाद सिंह, प्रकाशक–तारामंडल, प्रथम संस्करण–1989, पृ. 120
13. हल्दीघाटी–श्री श्यामनारायण पाण्डेय, प्रकाशक–इंडियन प्रेस प्रा.लि., इलाहाबाद, 2011, पृ. 149
14. वीरवर कुँअर सिंह–आरसी प्रसाद सिंह, प्रकाशक–तारामंडल, प्रथम संस्करण–1989, पृ. 123
15. हल्दीघाटी–श्री श्यामनारायण पाण्डेय, प्रकाशक–इंडियन प्रेस प्रा.लि., इलाहाबाद, 2011, पृ. 151
16. वीरवर कुँअर सिंह–आरसी प्रसाद सिंह, प्रकाशक–तारामंडल, प्रथम संस्करण–1989, पृ. 131–132
17. हल्दीघाटी–श्री श्यामनारायण पाण्डेय, प्रकाशक–इंडियन प्रेस प्रा.लि., इलाहाबाद, 2011, पृ. 152
18. वीरवर कुँअर सिंह–आरसी प्रसाद सिंह, प्रकाशक–तारामंडल, प्रथम संस्करण–1989, पृ. 139
19. हल्दीघाटी–श्री श्यामनारायण पाण्डेय, प्रकाशक–इंडियन प्रेस प्रा.लि., इलाहाबाद, 2011, पृ. 153
20. वीरवर कुँअर सिंह–आरसी प्रसाद सिंह, प्रकाशक–तारामंडल, प्रथम संस्करण–1989, पृ. 140